डॉ० कविता कुमारी सिंह
हिन्दी - विभाग
पी० जी०, द्वितीय सेमेस्टर

विषय — २० वीं सदी का पूर्वार्द्ध और किस्सा, यथार्थवाद का आरम्भ —

19 वीं शताब्दी इतिहास का संक्र... काल रहा। इस काल को ही यथार्थवाद चिंतन को साहित्य निर्माण करने का श्रेय जाता है। 'कॉपरनिकस' 'बेकन' और 'न्यूटन' के नवीन विचारों ने आदर्श को चुनौती दी और जनमानस को आन्दोलित कि... इस तरह विश्व - साहित्य धीरे धीरे मानव की समस्याओं, उनके वास्तविक जीवन तथा विकास की ...विचारों को अपने अन्दर समेटने लगा। फ्रांस की "समता, भ्रातृत्व एवं विश्वबन्धु" के नारे से ...यता एक नवीन दिशा प्राप्त कर रही थी।

यथार्थवाद अपने निश्चित सैद्धान्त... कला और साहित्य के क्षेत्र में 19 वीं ...प्रसार हुआ। यथार्थवाद मानव एवं समा... ईकाई के रूप में प्रस्तुत करता है। स...

यथार्थवाद साहित्य की यह प्रमुख विशेषताएँ है कि लेखक बिना किसी भय अथवा पक्षपात के ईमानदारी के साथ जो कुछ भी अपने आस-पास देखता है उसका चित्रण करता है। साहित्यकार फोटोग्राफर नहीं होता, वह निर्माता है। वह मात्र वस्तुओं को उसी रूप में चित्र नहीं करता, बल्कि चुनाव भी करता है। यथार्थ वह साहित्य संश्लेषण है जो चुनाव तथा रच के माध्यम से अपने वास्तविक विचारों को समुन्नत रूप में पाठकों के सामने उपस्थित कर साहित्य समाज में ऐसे आदर्शों की स्थापना जो कृत्रिम न लगे। मानव मन उसके अनुसार विचार करे। प्रेमचन्द ने 'साहित्य का उद्देश्य' निबन्ध में इस संदर्भ में लिखा है — " कसौटी पर वही खरा उतरेगा, जिसमें चि स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का स सृजन की आत्मा हो, जीवन की स

का प्रकार हो और जो हममें गति और बे
पैदा करे, सुलाए नहीं। प्रेमचन्द ने 1925 मे
अपने यथार्थवादी संबंधी विचारों को प्रक
तब यूरोप में यथार्थवादी संबंधी विमर्श अ
चरमोत्कर्ष को प्राप्त कर चुका था। वस्तुतः
कोरे यथार्थवाद की आलोचना करते हुए,
साहित्य का 'प्रकृतिवाद' है। प्रकृतिवाद के अ
समाज की क्रूर, भद्दी सच्चाई को हू-ब हू
किया जाता था, जो कि यथार्थ का स्व
उसके विश्लेषण या फिर ऐसा होने के
कारण के खोजने पर बल नहीं दिया जा
साथ ही भविष्य के लिए कोई संकेत
इसमें अनिवार्य न समझा जाता था।
ने इसी प्रकृतिवाद को यथार्थवाद क
मानकर इसका विरोध किया है।

इस युग के उपन्यास

गमन से हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र

धरातल पर लाने का श्रेय इस युग के उपन्यासकारों को जाता है। प्रेमचन्द ने सामाजिक कुरीतियों, राष्ट्रीय भावना, ग्रामीण जीवन की समस्याओं आदि का यथार्थ चित्रण किया है। यह युग यथार्थ उपन्यास का प्रौढ़ युग कहा जाता है। यथार्थ उपन्यासों का प्रारम्भ प्रेमचन्द के सेवासदन से होता है। इससे पहले प्रेमचन्द 'उर्दू' में लिखते थे। वरदान, प्रेमा, सोज़ेवतन आदि रचना उर्दू में प्रकाशित हुई। सेवासदन प्रेमचन्द ने 1918 में रचना की। सामाजिक अत्याचार से पीड़ित नारी, समाज के पतन और वेश्यावृत्ति में सुधार की समस्या का विश्लेषण किया। प्रेमचन्द वेश्यावृति की समस्या को दहेज, नारी अशिक्षा से जोड़कर देखते हैं। उन्होंने इस उपन्यास में दिखाया है कि स्त्री-शिक्षा के अभाव में किस प्रकार पूरा परिवार टूट जाता है। इनके उपन्यासों में भारतीय जीवन का चित्रण है।